मोक्ष प्राप्ति के सात राग

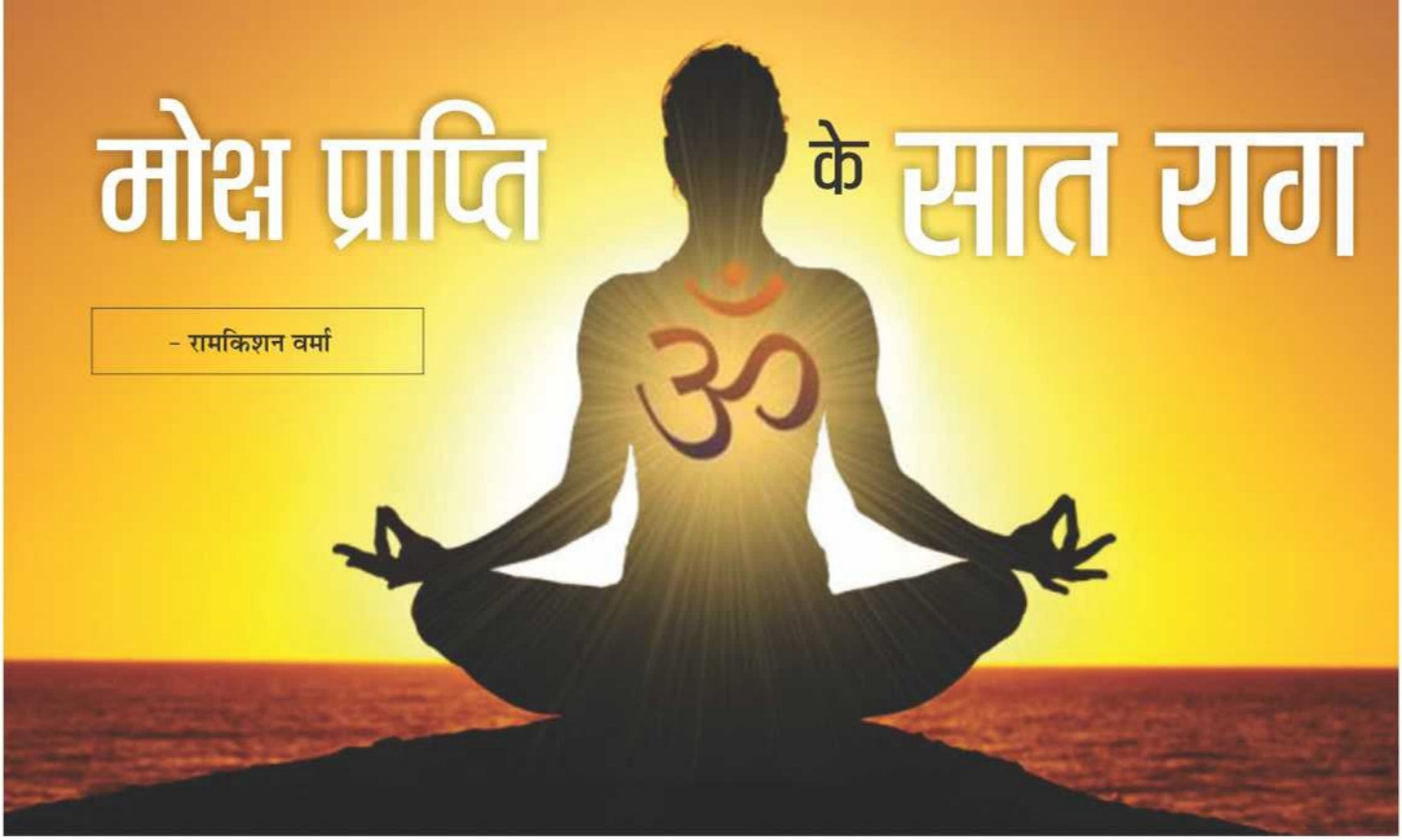

- रामकिशन वर्मा

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हैं। इनमें मोक्ष ही सर्वश्रेष्ठ है। इसकी प्राप्ति के लिए– ऋषि–मुनियों एवं सन्त–महात्माओं तथा अनेक भक्तों ने अपने–अपने साधनों का उपयोग किया और अपने जीवन को सार्थक बनाया। संगीत में नाद की साधना भी इसका एक सुगम मार्ग है। संगीत की राग–रागिनियों में जो शक्ति है, वह अन्य किसी साधन में नहीं। संगीत की दक्षिणी पद्धति (कर्नाटकी) के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के सात राग बताये जाते हैं। जिनमें छह ब्रह्म राग तथा सातवीं शक्ति रागिनी है। जैसे– (1) आदि राग (2) महेश राग (3) विष्णु राग (4) ब्रह्म राग (5) सरस्वती राग (6) अन्तर राग (7) शून्य राग। इन रागों में तत्वों के प्रकोप निवारण के लिए पृथ्वी का 'ल' जल का 'व' अग्नि का 'रं' वायु का 'यं' और आकाश का 'हं' होता है।

आदि राग

चार पंखुड़ियों के आधार चक्र की केन्द्र भूमि से उत्पन्न होकर आदि ताल अर्थात् एक ताल एक लघु चार मात्रा से युक्त होता है। इसकी गति में षड़ज–ग्राम की पहली उत्तरामंद्रा (सा रे ग म प ध नी) मूर्च्छना है। षड़ज ही ग्रह, अंश तथा न्यास है। अर्थात् षड़ज ही जन्म लग्न स्थान में पड़ता है। इसमें अणिमा सिद्धि की प्राप्ति होती है। जिसमें साधक अपने शरीर को सूक्ष्म कर लेता है। आधार चक्र की चारों पंखुड़ियों से मोक्ष के अतिरिक्त धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति वाले प्रत्येक पंखुड़ी से पांच–पांच अर्थात् बीस अन्य राग उत्पन्न होते हैं। जो ॐ गं गणपति की जन्म कुण्डली के चलित चक्र द्वारा जाने जाते हैं। इसकी ध्यान साधना के लिए – लाल वर्ण, शीश मुकुट, चार भुजा तथा अभय मुद्रा है।

महेश राग

लिंग मूल प्रदेश में छह पंखुड़ियों से युक्त स्वाधिष्ठान चक्र की केन्द्र भूमि से उत्पन्न होकर रूपक ताल अर्थात् एक लघु, एक द्रुत छह मात्रा से युक्त होता है। (हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति जिसे उत्तरी संगीत पद्धति भी कहा जाता है। इसमें रूपक ताल में सात मात्राएं होती हैं) इसमें षड़ज–ग्राम की तीसरी उत्तरायता (ध नी सा रे ग म प) मूर्च्छना है। धैवत ही ग्रह, अंश तथा न्यास होकर जन्मलग्न स्थान में पड़ता है। इससे लघिमा सिद्धि की प्राप्ति होती है। जिसमें साधक अपने शरीर को हल्का कर लेता है। मोक्ष के अतिरिक्त धर्म, अर्थ तथा काम के के लिए स्वाधिष्ठान की छहों पंखुड़ियों में प्रत्येक पंखुड़ी से एक–एक प्रधान तथा पांच–पांच अन्तर अर्थात् 36 राग तथा परन्तर राग उत्पन्न होते हैं। जो शिव कुंडली द्वारा जाने जाते हैं। इसकी ध्यान साधना के लिए – शीश जटा गंग चन्द्र, कर त्रिशूल, गले, गंड माल, व्याघ्राम्बर तथा अभय मुद्रा है।